

भारत-फ्रांस का रणनीतिक संबंध: एक विवेचन

सूर्यप्रकाश व्यास

सहायक आचार्य (अतिथि)

भू-राजनीति एवं रक्षा अध्ययन शोध प्रकोष्ठ,

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान (भारत)

ईमेल - suryaprakashvyas68@gmail.com

सारांश:

यूरोप के पश्चिम में स्थित फ्रांस प्राचीन और गौरवशाली राष्ट्र है। महाराजा रणजीत सिंह ने वहां के सैन्य विशेषज्ञों को अपनी सेना को प्रशिक्षण देने के लिए नियुक्त किया था। प्रथम विश्वयुद्ध में जोधपुर के सरदार रिसाला ने फ्रांस के विभिन्न स्थानों पर अपनी सैन्य सेवाएं दी थी। फ्रांस ने जिवोटी, जरेअफर्स तथा इसास द्वीपों पर संचार तथा वायु आधार विकसित किया। फ्रांस सुरक्षा परिषद का 'वीटो' अधिकार प्राप्त शक्तिशाली राष्ट्र है। जनरल डिगाल ने फ्रांस की विदेश नीति को एक दिशा प्रदान की थी। मार्शल योजना के द्वारा अमेरिका ने फ्रांस की भारी आर्थिक सहायता की। फ्रांस भारत का पुराना व्यापारिक व सामरिक सहयोगी रहा है। भारत व फ्रांस के मध्य अन्तरिक्ष, प्रतिरक्षा, परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग, समुद्री अध्ययन और परिवहन, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद नियंत्रण, आपराधिक व आर्थिक घोटाले वाले अपराधियों से संबंधित, स्कोर्पियन पनडुब्बियों, महाराष्ट्र में परमाणु संयंत्र लगाने, रेलवे, भारत द्वारा फ्रांस से युद्धक विमान क्रय करने (राफेल), शहरी विकास, हैमर प्रक्षेपास्त्र, मिटियोर, स्काल्प और माइका प्रक्षेपास्त्र, कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों का मझगांव में निर्माण आदि कई महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये। साथ ही भारत के साथ द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास 'वरुण', 'ला पेरोज', 'ओरियन', 'शक्ति' आदि में भाग लेता है। फ्रांस कई दशकों से भारत को परमाणु ईंधन व सैन्य सामग्री आपूर्ति करने वाला विश्वसनीय साथी रहा है और भविष्य में यह संबंध और भी प्रगाढ़ होंगे।

कुंजी शब्द : वीटो, मार्शल योजना, प्रतिरक्षा, समुद्री अध्ययन और परिवहन, स्कोर्पियन पनडुब्बी, हैमर, मिटियोर, स्काल्प, माइका प्रक्षेपास्त्र, कलवरी श्रेणी पनडुब्बी, सैन्य अभ्यास, परमाणु ईंधन।

प्रस्तावना

सामाजिक वैश्वीकरण और शक्ति संतुलन के बदलते वर्तमान परिवेश में कोई भी राष्ट्र अकेला आगे नहीं बढ़ सकता उसे अन्य मित्र व सहयोगी राष्ट्रों की आवश्यकता पड़ती है। इसी मूल भावना के आधार पर भारत तथा फ्रांस के मध्य मैत्री संबंधों का प्रारंभ हुआ। इन संबंधों में और भी प्रगाढ़ता आई जब 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षणों के बाद, जहां कई पश्चिमी राष्ट्रों ने प्रतिबंध लगाए, वहीं फ्रांस ने भारत के साथ अपने संबंधों को बनाए रखा। यह घटना दोनों देशों के मध्य विश्वास और राजनीतिक स्वायत्तता की साझा समझ को दर्शाती है। इसके पश्चात् दोनों राष्ट्रों के मध्य कई आर्थिक तथा सैन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समझौते हुए और आपसी संबंध और अधिक सशक्त हुए। वर्तमान में दोनों देश बहुध्रुवीय विश्वव्यवस्था के समर्थक हैं और वैश्विक मंचों पर परस्पर सहयोग कर रहे हैं।

फ्रांस की भौगोलिक स्थिति

यह यूरोप के पश्चिम में स्थित एक राष्ट्र है। जिसके पूर्व में जर्मनी, पश्चिम में अटलांटिक महासागर, दक्षिण-पश्चिम में स्पेन, उत्तर में इंग्लिश चैनल और उत्तर-पूर्व में बेल्जियम स्थित है। उसके पूर्वी भाग में महाद्वीपीय तथा

पश्चिम भाग में, भूमध्यसागरीय प्रकृति की जलवायु है। इस राष्ट्र का अधिकांश भाग है पर्वतीय तथा उत्तर-पश्चिमी भाग मैदानी है। इस राष्ट्र के पूर्व में आल्प्स पर्वत स्थित है। दक्षिण पश्चिम में 'पायरेनेस' प्राकृतिक रेखा फ्रांस व स्पेन को पृथक करती है। फ्रांस की प्रमुख नदियां राइन, लोयर, रोन, सीन व साओन है। यहां का सर्वोच्च शिखर माउन्ट ब्लांक है। इसके प्रमुख नगर पेरिस, मार्सेलेस, नाइस, लियान्स, नैन्टसे व बोर्डिक्स है। इस राष्ट्र का क्षेत्रफल 5,47,030 वर्ग किमी है। इसकी राज्यभाषा फ्रेंच, राजधानी पेरिस है। यहाँ अध्यक्षात्मक गणतंत्रीय शासन पद्धति से शासन चलता है। यहाँ का मानक समय समय ग्रीनविच मध्यम समय से एक घंटा आगे है। यहां के प्रमुख उद्योग-विमान निर्माण, इस्पात, रसायन, शराब तथा इत्र, यांत्रिकी एवं विद्युत उपकरण निर्माण है। यहाँ यूरेनियम, बॉक्साइट, इस्पात, एल्यूमीनियम, पोटेश, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, कच्चा लोहा आदि खनिजों का उत्खनन किया जाता है। यहाँ के प्रमुख हवाई अड्डे - चार्ल्स डी गैती (पेरिस), मेरिज्नेक (बोर्डिक्स), सेटोल्स (लेयोन), ब्लेगनेक (टोलोयुसी), मारसिलिस प्रोविन्स एवं नोटिस। यहाँ के प्रमुख पत्तन - मारसिलिस, ली हाव्रे, मेन्टिस, रोयन, बोर्डियोक्स।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि -

महाराजा रणजीत सिंह ने नेपोलियन बोनापार्ट की सेना के प्रसिद्ध सेनापति एलाई तथा वेन्चुरा को अपनी सिक्ख सेना को आधुनिक पाश्चात्य सैन्य प्रणाली तथा शस्त्रों के प्रशिक्षण के लिए नियुक्त किया था।

प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ होने पर अगस्त 1914 ई. में मारवाड़ राज्य की ओर से जोधपुर के 'सरदार रिसाले' की प्रथम और द्वितीय रेजीमेंट के कुछ भाग ने फ्रांस के विभिन्न स्थानों मार्सेलीज, मैरविल्ले, आर्मेन्टीअर्स और गिवेंची, यप्रे, फेस्टुबर्ट, सोमे, कैम्ब्राई, ला-वैक्केरी आदि में शत्रु से युद्ध लड़ने तथा सहायक सेना के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में इसे मार्च 1918 में फ्रांस से फिलस्तीन भेज दिया गया था जहां उसने इतिहास रच दिया।

फ्रांस के सैन्य आधार

फ्रांस ने मेडागास्कर के डिगो सुआरेज, तानानारिव नौ सैन्य आधारों में आधुनिक रक्षा सुविधाएँ विकसित की परन्तु पूर्व में किये गये समझौते के कारण उसे सन् 1975 में इसे छोड़ना पड़ा। उसके पश्चात् फ्रांस ने लाल सागर के तट पर स्थित जिवोटी, जरे अफर्स तथा इसास द्वीप में संचार व्यवस्था तथा वायु आधार विकसित किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् -

यूरोप के प्राचीन व शक्तिशाली राष्ट्र फ्रांस को संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में 'वीटो' का विशेषाधिकार प्राप्त है। नेपोलियन काल में फ्रांस ने लगभग सम्पूर्ण यूरोप पर अधिकार कर लिया था। यूरोप की राजनीति तथा सैन्य शक्ति के रूप में फ्रांस सदैव एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध में फ्रांस को भारी मात्रा में जन-धन की हानि उठानी पड़ी जिससे वहां आर्थिक असंतुलन तथा राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गयी। सन् 1946 से 1958 की अवधि के मध्य देश में बाईस मंत्रिमण्डल बने और अपदस्थ हुए। इसके पश्चात् मार्शल योजना के द्वारा अमेरिका ने फ्रांस की भारी आर्थिक सहायता की। इस कारण फ्रांस को विदेश नीति के लिए अमेरिका पर निर्भर होना पड़ा। उसने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अमेरिका तथा ब्रिटेन का समर्थन किया। इसी दबाव के कारण फ्रांस को अमेरिका व ब्रिटेन का अनुसरण करते हुए जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर पाकिस्तान का समर्थन करना पड़ा।

फ्रांस की विदेश नीति के सूत्रधार: जनरल डिगाल

सन् 1958 में जनरल डिगाल द्वारा फ्रांस में नया संविधान लागू किया गया। उन्होंने फ्रांस की विदेश नीति को नया आयाम देते हुए अमेरिका की पिछलग्गू नीति के स्थान पर स्वतंत्र नीति का अनुगमन किया तथा निःशस्त्रीकरण आयोग, नाटो, साम्यवादी चीन को मान्यता देने, मास्को परीक्षण प्रतिबंधित संधि, नाटो की सदस्यता त्यागने जैसे मुद्दों पर अमेरिका व ब्रिटेन से पृथक नीति का अनुसरण किया। सन् 29 अप्रैल, 1969 ई. को फ्रांस में हुए जनमत संग्रह में जनरल डिगाल द्वारा राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र दे दिया गया।

विभिन्न क्षेत्रों में रणनीतिक संबंध

रणनीतिक साझेदारी का प्रारंभ - जनरल डिगाल के राष्ट्रपति पद से त्यागपत्र के पश्चात् समाजवादी नेता फ्रांसिस मित्रां ने फ्रांस के राष्ट्रपति के रूप में फ्रांस को 'यूरोपीय मंच' पर स्थापित कर फ्रांस की विदेश नीति को नई दिशा दी। 7 मई 1995 को फ्रांस में जेम्स शिराँक के राष्ट्रपति बनने और गणतंत्र दिवस 1988 में विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत आगमन के समय दोनों देशों के मध्य नये अध्याय का प्रारम्भ हुआ और दोनों देशों के मध्य अन्तरिक्ष, प्रतिरक्षा, परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग, समुद्री अध्ययन और परिवहन जैसे महत्वपूर्ण द्विपक्षीय विषयों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के नियंत्रण, आपराधिक व आर्थिक घोटालों में लिप्त अपराधियों को सार्वजनिक करने से सम्बन्धित समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। दोनों देशों ने पारस्परिक सहयोग को मूर्तरूप देने के लिए एक रणनीतिक समूह को स्थापित करने पर सहमति व्यक्त की। साथ ही तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा दोनों राष्ट्रों के मध्य आर्थिक क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की भी इच्छा व्यक्त की गयी।

भारत और फ्रांस के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

आपसी सम्मान	साझा रुख	रणनीतिक स्वायत्तता
व्यापारिक क्षेत्र में सहयोग	गुटनिरपेक्षता के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता	रक्षा सहयोग
आर्थिक क्षेत्र में सहयोग	परमाणु ऊर्जा सहयोग	सैन्य अभ्यास
व्यापारिक क्षेत्र में सहयोग	अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग	राफेल विमान सौदा

रक्षा सहयोग -

फ्रांस द्वारा भारतीय वायुसेना के लिये सन् 1985-86 ई. में मिराज 2000 युद्धक विमान उपलब्ध करवाये गए। भारत फ्रांस के सम्बन्धों में राजीव गांधी के कार्यकाल के समय स्वीडन की बोफोर्स तोपों को खरीदने के लिये फ्रांस की सोफना तोपों को निम्न स्तरीय बताने से कड़वाहट उत्पन्न हो गयी थी। राजीव गांधी ने फ्रांसीसी कम्पनी स्पाई कापाग को ठेका स्वीकृत करने वाले व्यक्तियों को अपने मंत्रिमण्डल से निकाल दिया क्योंकि वे इटली की कम्पनी साम प्राँगेत्ती को ठेका दिलवाना चाहते थे। नरसिंहा राव के प्रधानमंत्रित्व काल में फ्रांस ने सन् 1995 में

पाकिस्तान को आधुनिक मिराज 2000 युद्धक विमान बेचने का निर्णय लिया परन्तु आर्थिक अभाव के कारण विमान खरीदने में पाकिस्तान अक्षम रहा।

भारत और फ्रान्स ने रक्षा क्षेत्र में संयुक्त शोध और विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये नवंबर 2002 में एक बैठक की और रक्षा क्षेत्र में नई तकनीक के विकास और शोधकार्यों के आकलन के लिए एक इंडो-फ्रेंच फोरम की स्थापना की।

भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की 11 से 13 सितम्बर 2005 को फ्रांस की यात्रा के समय दोनों देशों के मध्य भारतीय नौसेना के आधुनिकीकरण के लिये छः स्कोर्पियन पनडुब्बियाँ उपलब्ध करवाने की वार्ता के पश्चात् नई दिल्ली में समझौते पर हस्ताक्षर हुए। पहली 2012 तक तथा बाकी सभी पनडुब्बियाँ 2017 तक उपलब्ध करवाना निश्चित हुआ।

भारत में कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों का निर्माण मझगाँव डॉकयार्ड शिपबिल्डर्स लिमिटेड (डक्स) मुंबई द्वारा मैसर्स नेवल ग्रुप, फ्रांस के सहयोग से किया जा रहा है। इस श्रेणी की (प्लै खण्डेरी, प्लै करंज, प्लै वेला आदि) का अभी तक निर्माण हो चुका है। प्लै वागीर को 23 जनवरी 2023 को भारतीय नौसेना में सम्मिलित किया गया। यह डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बी भारत में ही निर्मित अत्यधिक महंगी है क्योंकि ये 21 दिनों से अधिक समय तक पानी की सतह के नीचे रह सकती है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 10-12 फरवरी 2025 की फ्रांस यात्रा के समय मोदी जी ने फ्रांस को पिनाका रॉकेट प्रणाली देने का प्रस्ताव रखा था।

परमाणु ऊर्जा सहयोग -

भारत फ्रांस के मध्य परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग का प्रारम्भ सन् 1998 में जेम्स शिरॉक के गणतंत्र दिवस पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आगमन के समय हुआ। उस समय दोनों देशों के मध्य परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर हुए। सन् 1974 में भारत द्वारा प्रथम परमाणु परीक्षण किये जाने के समय भी फ्रांस का भारत के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रहा था। फ्रांस ने अमेरिका के विरोध के बाद भी भारतीय आणविक कार्यक्रम में सहयोग किया। भारतीय अभियंताओं तथा वैज्ञानिकों को फास्ट ब्रीडर आणविक रिएक्टर में प्रशिक्षण दिया और गुरुजल उत्पादन में प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान की। सन् 1980 के दशक में फ्रांस ने परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किये तथा अमेरिकी नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों के समूह में सम्मिलित हो गया। फ्रांस के राष्ट्रपति याक शिराक की 20 जनवरी 2006 की भारत यात्रा के समय दोनों देशों के मध्य नाभिकीय समझौता सम्पन्न हुआ। फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी की यात्रा के समय असैनिक परमाणु सहयोग, श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् फ्रांस की यात्रा (10-12 अप्रैल 2015) के समय महाराष्ट्र में परमाणु संयंत्र लगाने तथा असैनिक परमाणु सहयोग के मुद्दे पर समझौते हुए।

भारत-फ्रांस के मध्य राफेल विमान सौदा

भारत यात्रा पर आए फ्रांस के रक्षा मंत्री यांयीव लीडियान की रक्षा मंत्री मनोहर परिकर के साथ हुई बैठक में दोनों देशों के मध्य दो इंजन वाले 36 राफेल लड़ाकू विमान क्रय करने के सौदे पर 23 सितंबर, 2016 को हस्ताक्षर किए गए। इनमें 28 विमान एकल सीट वाले और 8 दोहरी सीट (प्रशिक्षण) वाले थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 21 सितंबर को हुई केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की बैठक में इस सौदे को स्वीकृति दी गयी थी।

भारत सरकार ने लगभग 60,000 करोड़ रूपयों के राफेल विमानों के क्रय के इस सौदे को फ्रांसीसी कंपनी डसाल्ट एविएशन के साथ न करके फ्रांस की सरकार के साथ किया। इस सौदे के अन्तर्गत फ्रांसीसी कंपनी डसाल्ट एविएशन इन विमानों का निर्माण भारतीय वायुसेना की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए करेगी। साथ ही यह कंपनी इन विमानों में हवा से शत्रु पर अचूक निशाना लगाने वाली शस्त्र प्रणाली भी सौंपेगी। इसके अतिरिक्त सभी राफेल जेट बियाँड विजुअल रेंज 'मेटियोर' और 'स्कैल्प' जैसे प्रक्षेपास्त्रों से भी सुसज्जित होंगे जो शत्रु के ठिकानों को नष्ट करने में सक्षम होंगे।

डसाल्ट एविएशन भारतीय वायुसेना के तीन पायलटों, एक इंजीनियर और छः तकनीशियनों को प्रशिक्षण भी देगी। समझौते के प्रावधान के अनुसार कंपनी विमानों के साथ मिलने वाले शस्त्रों और प्रक्षेपास्त्रों के रख-रखाव की सुविधा भारत में विकसित होने तक (छः माह तक) स्वयं ध्यान रखेगी और उसका अतिरिक्त शुल्क भी नहीं लेगी। साथ ही कंपनी इन विमानों के कलपूर्ज सात वर्षों तक प्रारम्भिक मूल्य पर ही उपलब्ध करवाएगी। इसके अतिरिक्त भारत सरकार ने इस सौदे की कुल राशि में से 4200 करोड़ रुपये कम भी करवाए।

भारत को पहला राफेल विमान अक्टूबर 2019 में भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की फ्रांस यात्रा के समय सौंपा गया। उसके पश्चात् फ्रांस से राफेल विमानों को 17 स्क्वाड्रन 'गोल्डन एरोज' के पायलट लेकर आए पाँच राफेल विमान सोमवार 27 जुलाई 2020 की प्रातः फ्रांस के मेरिग्नैक स्थित दासो एविएशन फैसिलिटी से भारत के लिए रवाना हुए और सोमवार की सायं संयुक्त अरब अमीरात के फ्रांसीसी एयरबेस अल दफ़ा पहुंचे। वहाँ उनमें ईंधन भरा गया और एक दिन के विश्राम के पश्चात अल दफ़ा से 29 जुलाई को उड़ान भरकर अंबाला में उतरे।

अंतरिक्ष, आर्थिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में सहयोग

भारत के औद्योगिकीकरण में सहायता करने वाला फ्रांस पहला राष्ट्र था और अमेरिका के विरोध के पश्चात् भी आधुनिकतम रक्षा सामग्री उपलब्ध करवायी थी। भारतीय उपग्रहों को एरियान प्रक्षेपकों से प्रक्षेपित किया। भारतीय ध्रुवीय अन्तरिक्ष वाहनों में प्रयुक्त प्रक्षेपक फ्रांसीसी रॉकेट वाइकिंग का ही संशोधित रूप है। रॉकेट के लिये तरल ईंधन प्रौद्योगिकी भी फ्रांस द्वारा भारत को उपलब्ध करवायी गयी। जनवरी 2003 में दोनों देशों के मध्य प्रत्यर्पण संधि तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की फ्रांस यात्रा (10-12 अप्रैल 2015) के समय दोनों देशों के मध्य 17 महत्वपूर्ण समझौतों (रेलवे, अंतरिक्ष सहयोग, विज्ञान और तकनीकी, मरीन तकनीकी, फ्रांस द्वारा नागपुर और पांडिचेरी को स्मार्ट सिटी बनाने, भारत द्वारा युद्धक विमान फ्रांस से क्रय करने) संबंधी विषयों पर आपसी सहमति के साथ हस्ताक्षर हुए।

इसके अतिरिक्त दोनों देशों के मध्य नवकरणीय ऊर्जा, शहरी विकास, आदि अन्य क्षेत्रों में सहयोग के लिए हस्ताक्षर किये गए। भारत फ्रांस के साथ एक योजना में 120 किलो न्यूटन क्षमता वाला इंजन विकसित करेगा। भारत-चीन के मध्य तनाव को दृष्टिगत रखते हुए भारत ने फ्रांस की कंपनी साजेम (साफरान) में निर्मित और पर्वतीय युद्ध में उपयोगी हवा से भूमि पर मार करने वाले हैमर प्रक्षेपास्त्र क्रय करने, इसके निर्माण, 800 मीटर से अधिक ऊँचाई पर उड़ने वाले हेलीकॉप्टर के निर्माण, उच्च तकनीक, रेयर मिनेरल्स, आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग आदि से संबंधित 21 समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

सैन्य अभ्यास

दोनों देशों के मध्य निम्नलिखित सैन्य अभ्यास आयोजित किये गए -

1. भारत और फ्रांस की नौसेनाओं ने पहली बार रीयूनियन द्वीप से संयुक्त गश्ती दलका संचालन किया जिसकी जानकारी 22 मार्च 2020 को दी गई।

2. भारत और फ्रांस के मध्य सन् 1993 ईस्वी से प्रारंभ नौसैनिक, अभ्यास 'वरुण' के 21वें संस्करण का 16 जनवरी 2023 को पश्चिमी समुद्र तट पर आयोजन किया गया जिसमें स्टील्थ विध्वंसक, निर्देशित प्रक्षेपास्त्र युद्धक, नौका, समुद्री गश्ती विमान आदि सम्मिलित हुए।
3. फ्रांसीसी नौसेना द्वारा द्विवार्षिक अभ्यास 'ला पेरोज' के तीसरे संस्करण का आयोजन 13-14 मार्च 2023 को हिन्द महासागर में किया गया।
4. शिवांगी सिंह राफेल जेट फाइटर उड़ाने वाली भारतीय वायुसेना की प्रथम महिला पायलेट हैं। इन्होंने 26 अप्रैल 2023 को फ्रांस में बहुराष्ट्रीय अभ्यास 'ओरियन' में भाग लिया।
5. भारतीय वायुसेना 17 अप्रैल से 5 मई 2023 तक आयोजित अभ्यास 'ओरियन' में भाग लेने के लिए फ्रांस के मॉण्ट डे मार्सन में फ्रांसीसी वायु और अन्तरिक्ष बल (FAF) के वायुसेना आधार स्टेशन पहुंची। भारतीय वायुसेना के दल में चार राफेल विमान, दो सी-17 और दो आईएल-78 विमान और 165 एयरमैन सम्मिलित थे।
6. भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात के 9 जून 2023 को अपना तीन दिवसीय पहला त्रिपक्षीय समुद्री साझेदारी अभ्यास पूर्ण किया।
7. भारत-फ्रांस का संयुक्त सैन्य अभ्यास 'एक्सरसाइज शक्ति' का 7वाँ पुनरावृत्ति परीक्षण, 13-26 मई 2024 तक मेघालय के उमरोई में आयोजित किया गया। इसका मुख्य ध्यान अर्द्ध शहरी और पहाड़ी क्षेत्रों में संचालन पर था।
8. भारत और फ्रांस के मध्य 19 से 22 मार्च 2025 तक अरब सागर में संयुक्त युद्धाभ्यास के 23वें संस्करण का आयोजन किया गया।
9. दिनांक 18 जून 2025 से 1 जुलाई 2025 तक भारतीय सेना ने द्विवार्षिक भारत-फ्रांस संयुक्त सैन्य अभ्यास 'शक्ति' के 8वें संस्करण में कैंप लारजैक, ला कैवेलरी फ्रांस में आयोजित अभ्यास में भाग लिया।

भविष्य की संभावनाएँ

फ्रांस के साथ भारत के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध भारत के हित में हैं। भारत फ्रांस के माध्यम से यूरोपीय संघ से सम्बन्धों को और अधिक दृढ़ कर सकता है। भारत और फ्रांस के मध्य रक्षा और तकनीकी सहयोग का विस्तार हो। भारत फ्रांस के साथ हिंद प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त नेतृत्व कर सकता है। साथ ही हरित ऊर्जा और सतत विकास के क्षेत्र में सहयोग कर सकता है। आर्थिक संबंधों का और अधिक विस्तार कर सकता है तथा फ्रांस के माध्यम से उसके उपनिवेश रहे अफ्रीका के देशों तक आर्थिक व व्यापारिक विस्तार कर सकता है। भारत फ्रांस को आतंकवाद से निपटने, साम्प्रदायिक हिंसा से निपटने, अवैध घुसपैठ को रोकने, शरणार्थियों की आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने, अवैध निर्माण तथा मादक द्रव्यों के रोकथाम संबंधित अनुभवों का लाभ लेकर अपने देश को अधिक सशक्त और नागरिकों के लिए भयविहीन वातावरण तैयार कर सकता है।

निष्कर्ष

अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत और फ्रांस के मध्य रणनीतिक संबंध विश्वसनीयता, साझा-हितों और दीर्घकालिक सहयोग पर आधारित हैं। यह संबंध केवल द्विपक्षीय नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रभावशाली हैं। कई दशकों से फ्रांस द्वारा भारत को आर्थिक, रक्षा, परमाणु ईंधन, अंतरिक्ष, समुद्री विज्ञान, रेलवे, युद्धक विमान, पनडुब्बी, हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में निरन्तर सहयोग, इन संबंधों को और अधिक दृढ़ बना रहा है। दोनों देश विश्व में आर्थिक रूप से, सैन्य शक्ति की दृष्टि से परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र हैं और दोनों के मध्य पारस्परिक सहयोग दोनों राष्ट्रों की उन्नति के लिए, वहां की जनता के लिए कल्याणकारी हैं तथा दोनों देशों की कला-संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के

लिए प्रगतिकारक भी रहेगा। भारत-फ्रांस के मध्य का यह संबंध न केवल दोनों देशों के लिये बल्कि वैश्विक शांति, सुरक्षा और स्थिरता में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. पत्रिका इयर बुक, 2009, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, संपादक आनंद जोशी। धीरेन्द्र राहुल, तृतीय संस्करण, 2009 संशोधित), ISBN: 81-86326-00-231, पृ. 831
2. मिश्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, भारतीय सैन्य इतिहास एवं सैन्य संगठन, मॉडर्न पब्लिशर्स, जलन्धर, प्रथम संस्करण 2008, प्रथम पत्र पृ-83,
3. रेड, पण्डित विश्वेश्वरनाथ, मारवाड़ का इतिहास, भाग-2, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर, पुनः मुद्रित-1990, ISBN: 81-86103-46-5, पृ. 595, 596
4. मिश्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, युद्ध एवं राष्ट्रीय सुरक्षा, मॉडर्न पब्लिशर्स, जलन्धर प्रथम संस्करण-2008, पेपर द्वितीय, पृ.113
5. शर्मा डॉ. मथुरालाल, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, पुनर्मुद्रित-2008, ISBN: 81-85788-11-1, पृ.-238-241
6. वर्मा, डॉ. दीनानाथ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (1914 से आज तक का राजनयिक इतिहास), ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2009, पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित, पृ-46,466
7. सिंह, डॉ. लल्लन जी, राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, संस्करण -14, 2021, ISBN:978-93-91-984-18-2, पृ. 579-580,583-584,
8. डिफेंस मॉनिटर, वॉल्यूम-11, इश्यू-6, अगस्त-सितम्बर 2023, पृ.-26, 28
9. डिफेंस मॉनिटर, वॉल्यूम-8, इश्यू-6, अगस्त - सितम्बर 2020, पृ-17, 18
10. डिफेंस मॉनिटर, वॉल्यूम-9, इश्यू-1, अक्टूबर - नवंबर 2020, पृ. 28-29
11. समसामयिकी अवलोकन धनकर, करेंट अफेयर्स, 15 दिसम्बर 2016, पृ-34
12. समसामयिकी अवलोकन धनकर करेंट अफेयर्स, 15 अगस्त 2017, पृ-8
13. समसामयिकी महासागर 'अरिहंत' करेंट अफेयर्स, रिक्रेशर, 2020, पृ. 8,112
14. समसामयिकी महासागर 'अरिहंत' करेंट अफेयर्स, अर्द्ध वार्षिकी 2023, पृ. 105-106, 108-111
15. करेंट अफेयर्स 'अरिहंत', अर्द्ध वार्षिकी 2024, पृ. 134
16. करेंट जी. के. 'मूमल' अर्द्धवार्षिकांक-2025, जनवरी 2025 से 15 अगस्त 2025, पृ.- 40, 59, 133, 144
17. दैनिक भास्कर जोधपुर, राजस्थान बुधवार, 18 फरवरी, 2026, पृ. 1
18. राजस्थान पत्रिका जोधपुर, राजस्थान, बुधवार, 18 फरवरी 2026, पृ. 1
19. दैनिक नवज्योति, जोधपुर, राजस्थान, बुधवार, 18 फरवरी, 2026, पृ. 1